प्यारे इस्लामी भाइयो हम मज़हबे इस्लाम के मानने वाले हैं हम एक खुदा की इबादत करने वाले हैं और उसके महबूब बन्दों से मुहब्बत करने वाले हैं और सबसे ज़्यादा मुहब्बत हम अपने नबी करीम ﷺ से करते हैं और साथ साथ आपके और अहले बैत और सहाबा ए किराम से भी मुहब्बत करते हैं नबी करीम के अहले बैत में एक बड़ी हस्ती इमाम आली मक़ाम सय्यदना हुसैन रदिअल्लह अन्हु भी हैं उन का मर्तबा इतना बड़ा है के वो हुज़ूर ﷺ के सहाबी भी हैं और अहले बैत में से भी हैं और आपकी प्यारी बेटी के प्यारे बेटे यानि आपके नवासे भी हैं

इमाम हुसैन रदिअल्लहु अन्हु रात रात भर जाग कर अल्लाह की इबादत करने वाले और क़ुरआने अज़ीम की तिलावत करने वाले मुत्तक़ी इबादतगुज़ार ,अल्लाह के बहुत बड़े वली हैं साथ ही साथ आप मज़हब ए इस्लाम के लिए राहे खुदा में अपनी जान क़ुर्बान करने वाले शहीद भी हैं मुहर्रम की **10 तारीख 61 हिजरी** में आप **कर्बला की ज़मीन** में शहीद हुए आपने अपने खून से इस्लाम को सींचा और मज़हबे इस्लाम को नई ज़िन्दगी अता की और **10 मुहर्रम** जो की पहले से एक तारीखी और यादगार दिन है इस वाक़ये ने इस दिन को और भी ज़िंदा ओ जावेद कर दिया और रहती दुनिया तक इस दिन को इमाम ए हुसैन के नाम से जाना जाता रहेगा गोया के ये **हुसैनी दिन** हो गया और बेशक ऐसा होना ही चाहिए लेकिन मज़हब ए इस्लाम एक सीधा सच्चा संजीदा वाला मज़हब है और इसकी हदें मुक़र्रर हैं लिहाज़ा इस दिन जो भी हो सब कुछ शरीयत के दायरे में रहकर हो तभी इस्लामी बुज़ुर्गों की यादगार और हमारे लिए वाइसे रेहमत होगा

हम जैसा करेंगे तो हमें देखकर लोग यही कहेंगे के इनके बुज़ुर्गों का यही तरीक़ा रहा होगा क्योके क़ौम अपने बुज़र्गों और पेशवाओं का तार्रुफ़ कराती है

मगर अफ़सोस आज हमने मुहर्रम के दिनों को खास तौर से आशूरा के दिन **को मेला- ठेला, खेल- तमाशा ,ढोल बाजा ग़ैर शरई कामो और मनोरंजन का दिन** बना डाला क्या ये हमारी इमाम ए अली मक़ाम से मुहब्बत का इज़हार है ?

याद रखो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त कुरआंन करीम में इरशाद फरमाता है

"जिन लोगों ने अपने दीन को खेल तमाशा बना लिया और दुनिया की ज़िन्दगी ने इन्हे धोके में डाल दिया आज हम उन्हें छोड़ देंगे जैसा के उन्होंने उस दिन के मिलने का ख्याल छोड़ दिया था और जैसा के वो हमारी आयतों से इंकार करते थे " (सूरेह अनआम)

ताज़ियादारी

आज कल जो ताज़िए बनाये जाते हैं पहली बात तो ये के हज़रत इमाम अली मक़ाम के रौज़े का सहीह नक़्शा नहीं है अजीब अजीब तरह के नक़्शे बनाये जाते हैं और फिर उन्हें घुमाया और गश्त कराया जाता है और एक दूसरे से मुक़ाबला किया जाता है और इन खुराफातों के ज़रिये ही हमारी पकड़ होती है

और कभी कभी ये खुराफात इतनी बढ़ जाती है के बहुत बड़ी लड़ाई की शक्ल इख़्तियार कर लेती है और ये सब इमाम हुसैन की मुहब्बत के नाम पर किया जाता है !

ज़रा सोचिये आज कोई हिन्दोस्तानी ताज़ियादार जिसने कर्बला ए मोअल्ला की ज़ियारत तक नहीं की उसका बनाया हुआ नक़्शा मज़ारे मुक़द्दस के मुताबिक़ कैसे हो सकता है ? जबकि उलमा ए इस्लाम के नज़दीक मुत्तफ़िक़ुन अलै ये है के अगर ताज़िया मज़ार मुक़द्दस के जैसा न हो तो फिर इसका बनाना जाइज़ नहीं

और बाज़ नादान हज़रात इसकी ताज़ीम में इस क़दर बढ़ जाते है के इसको सजदा करते हैं और इसको हाजत रवा और मुश्किल कुशा ख्याल करते हैं और औलिया अल्लाह की क़ब्रों की मिस्ल इसकी ताज़ीमों तौक़ीर करते हैं दुरूदो सलाम के नज़राने अक़ीदत पेश करते हैं और जो इसकी ताज़ीम ओ तौक़ीर न करे उससे लड़ते झगड़ते हैं

हाय अफ़सोस ! वह मुस्लमान कहाँ गया जो अल्लाह की तौहीद और हुज़ूर नबी करीम ﷺ की इज़्ज़त पर पहरा दिया करता था आज हर तरफ **नामूस ए रिसालत** ﷺ पर हमले हो रहे हैं अहले बैत ए अतहार और सहाबा ए किराम की शान में गुस्ताखियां की जा रही हैं मगर मुस्लमान सो रहा है इस पर ग़फ़लत की नींद तारी है आखिर कब तक हम ऐसे ग़ैर शरई कामो में उलझ कर हम अपने दीन ओ सुन्नियत का मज़ाक बनवाते रहेंगे सहाबा ए किराम ने अपनी पूरी ज़िंदगियाँ इस्लाम के लिए वक़्फ़ कर दीं और हमेशा अपनी क़ुर्बानियां पेश करते रहे कल क़यामत के दिन क्या जवाब दोगे जहाँ नफ़्सी नफ़्सी का आलम होगा अभी वक़्त है इन कामो से बचने का और शरीयत के अहकाम की पावंदी करने का अगर हम ऐसा न कर सके तो वो दिन दूर नहीं के हमारे ऊपर ज़ुल्म किया जायेगा क्या हमने नहीं देखा फिलिस्तीन, बर्मा , और शाम के मुस्लमान क़त्ल ओ ग़ारत के कैसे शिकार हुए? कल ये वक़्त हम पर भी आ सकता है इस लिए इस बुरे वक़्त से पहले हमें जागना होगा

मेंहदी

उलमा ए अहले सुन्नत तो इसको नाजाइज़ क़रार देते हैं लेकिन इसके बारे में एक शिया फ़ाज़िल की एक तहरीर पेश करना काफी है फ़ाज़िल रज़ी उल रिज़वी बिन सय्यद अली अल हायरी लाहौरी लिखता है –

“उलमा ए मुज्तहेदीन इराक ओ हिन्द का ये इत्तफ़ाक़ है के कर्बला में हज़रत क़ासिम के निकाह का कहीं ज़िक्र नहीं मिलता पस इस्लामी शरीयत में जिस चीज़ की कोई भी असलियत न हो उसको मज़हब बनाना गुनाह है” (रुसूमात ए मुहर्रम और ताज़िया)

एक सुन्नी मुस्लमान के लिए ये ग़ैरत की बात है के मेहदी को शिया मौलवी भी गुनाह और बे असल कहे और हम सुन्नी हो कर हर साल मेहदी को बनाते और घुमाते रहे ऐ मेरे दोस्तों बाज़ आ जाओ और अल्लाह की रज़ा के लिए अपनी ज़िन्दगी को लगा दो शरीयत को निभाना तुम पर गिराँ गुज़रता है और ग़ैर शरई कामो में अपना वक़्त और पैसा क्यों जाया करते हो अगर इतना वक़्त और पैसा हम अपने शरीयत के मुताबिक़ खर्च करें तो दुनिया ओ आख़िरत दोनों में हमें कामियाबी हासिल हो सकती है वल्लाह खुदा से डरो , दामन रसूल को थाम लो अगर तुम्हारे एक हाथ में क़ुरआन हो तो दूसरे में दामन ए अहले बैत तभी तुम्हे फ़तेह नसीबी हासिल हो सकती है

अहादीस और उलमा के अक़वाल

हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया
अल्लाह तआला ने मुझ को ढोल ,बाजे,और बांसुरियों को मिटाने का हुक्म दिया |

एक और हदीस में हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया
मेरी उम्मत में ऐसे लोग होंगे जो ज़िनाकारी ,रेशम ,शराब और ढोल बाजों को हलाल कर लेंगे| (इस हदीस में हुज़ूर ने ढोल बाजों को ज़िनाकारी शराब वग़ैरह के साथ शुमार फ़रमाया है) (मिश्कात शरीफ, बुखारी शरीफ)

हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह लिखते हैं -
अशरा ए मुहर्रम में जो ताज़ियेदारी होती है गुम्बद नुमा ताज़िये और तस्वीरें बनायीं जाती हैं ये सब नजाइज़ हैं | (फतावा अज़ीज़िया)

हज़रत मौलाना हशमत अली खां बरेलवी फरमाते हैं
ताज़िया बनाना ,उन्हें बाजे ताशे के साथ धूम धाम से उठाना ,उनकी ज़ियारत करना , उनका अदब और ताज़ीम करना उन्हें सलाम करना , उन्हें चूमना , उनके आगे झुकना , और आँखों से लगाना , बच्चों को हरे कपड़े पहनाना, घर घर भीक मंगवाना, कर्बला जाना वगैरह वगैरह शरअन नाजाइज़ व गुनाह हैं (शमए हिदायत)

मुहर्रम कैसे मनाएं ?

1. हज़रत इमाम हुसैन रदिअल्लहु अन्हु और जो लोग उन के साथ शहीद किये गए उन को सवाब पहुंचाने के लिए सदक़ा ओ खैरात करें
2. हो सके तो मुहर्रम की 10 तारीख का रोज़ा रखा जाये जिसकी बड़ी फ़ज़ीलत है और साथ में 9 या 11 तारीख का भी रोज़ा रखें
3.पानी और शरबत की सबील लगाएं

4.गरीबों , मिस्कीनों , यतीमों और मज़लूम मुसलमानों की माली मदद करें
5.ज़िक्र ए शहीदाने कर्बला जो मुस्तनद रिबायत से बयान किया जाये उसे सुनें ये बाइस ए सवाब है
6.अपने शहर, मुहल्ले में हर तरह की बुराई जैसे ज़िनाकारी , शराबनोशी , जुवा , गुंडागिर्दी वगैरह को ख़त्म करने की कोशिश करें
7.अपनी ज़िन्दगी को अपने इमाम ए पाक के नक़्श ए क़दम पर चलते हुए गुज़ारे मतलब ये के अपनी सारी बुरी आदतों को छोड़कर शरीयत के पाबंद बन जाएँ , यही इमाम ए पाक से सच्ची मुहब्बत है यही गुलाम ए हुसैन होने की सच्ची दलील है और यही कर्बला का पैगाम है

"हुसैन का नाम और मातम नहीं है अहले सुनन का शेबा
शहीद मरते नहीं हैं नज़्मी क़ुरआन ऐलान कर रहा है"

मुहर्रम और ताज़ियादारी

अंदर पढ़ें

नाशिर

तहरीक निज़ामे मुस्तफा ﷺ

9634735598,9690905060,9675801762